# ‘मलबे का मालिक’ कहानी में मानवीय मूल्यों का विघटन

**आशा देवी**

सारांश: मोहन राकेश जी द्वारा लिखी कहानियों के अंतर्गत हम संबंधों की यंत्रणा और अकेलेपन को देखते हैं। ऐसा अकेलापन जो न केवल अकेले रहने पर महसूस किया जाता है बल्कि समाज में रहने के बावजूद भी व्यक्ति उस अकेलेपन से दूर नही हो पाता। राकेश जी ने यह अकेलापन अलग-अलग परिवेश के माध्यम से अपनी रचनाओं में अंकित किया है। मानसिक अंतर्द्वंद, आपसी संबंध का टकराव, और सांप्रदायिक विद्वेष तथा विभाजन की त्रासदी का दर्द भी इनकी कहानियों में सुनाई देता है। ‘मलबे का मालिक’ कहानी भी एक ऐसी ही कहानी है जिसमें विस्थापन की त्रासदी का दर्द तो है ही साथ ही मानवीय मूल्यों का विघटन भी उद्घघाटित होता है। यह एक ऐसी कहानी है जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ वृत्ति के चलते इंसान किसी भी घर परिवार को तबाह कर सकता है। वह केवल दूसरों की संपत्ति को देखकर अपनी इंसानियत और सामाजिक संबंधों को कुचल देता है। इस समाज में जहाँ हम केवल पारिवारिक संबंधों को ही महत्व नहीं देते, सिर्फ़ उन्हें ही अपना नहीं समझते, बल्कि विश्वास के आधार पर सामाजिक संबंधों को भी पूरी तरह से जीते हैं। परंतु कभी कभी यह विश्वास हमारे लिए सही साबित नहीं हो पाता और संबंधों का विखराब हो जाता है। ‘मलबे का मालिक’ कहानी भी इन्हीं सामाजिक संबंधों के बिखराव को प्रस्तुत करती हुई दिखती है।

मोहन राकेश जी ‘नयी कहानी आंदोलन’ के साहित्यकार हैं। इनका जन्म 8 जनवरी 1925 पंजाब में हुआ तथा मृत्यु 3 जनवरी 1972 ईस्वी को हुई थी। इन्होंने गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। इन्होंने हिंदी नाटकों की विकास यात्रा को नए दौर के साथ जोड़ा। नाटकों में ‘लहरों के राजहंस’ , ‘आषाढ़ का एक दिन’, ‘आधे अधूरे’ विख्यात है। उपन्यासों में ‘अंधेरे बंद कमरे’, ‘ना आने वाला कल’, ‘अंतराल’ आदि। कहानियों में ‘मिस पाल’, ‘आर्द्रा’, ‘जानवर और जानवर’, ‘परमात्मा का कुत्ता’, आदि कहानियों ने हिंदी कहानी का परिदृश्य ही बदल दिया। इनके कथा साहित्य में शहरी मध्यवर्ग तथा भारत विभाजन की पीड़ा बहुत ही सशक्त रूप से अभिव्यक्त हुई है।

भारत देश को जब आज़ादी मिली तो देश के लोगों को उत्सव की खुशी के साथ साथ विस्थापन की त्रासदी का दर्द भी झेलना पड़ा। अंग्रेज़ी शासन द्वारा 'फूट डालो और शासन करो’ की नीति ने देश के लोगों को एक दूसरे के खिलाफ़ खड़ा कर दिया। देश विभाजन के साथ ही सांप्रदायिकता ने जन्म लिया और हिंदू मुसलमानों में भयंकर दंगे हुए। इन्हीं दंगो के चलते अनेक लोगों को अपने घर और वतन को छोड़कर जाना पड़ा और जो लोग अपनी जन्मभूमि को छोड़कर नहीं जा सके अर्थात् अपने देश से अलग नहीं हुए उन्हें अपने ही घरों में अपने ही समाज में रहने वाले दूसरे धर्म

के व्यक्तियों द्वारा छला गया, जिन्हें वह अपना विश्वासपात्र समझते थे। 'मलबे का मालिक' कहानी भी इसी पृष्ठभूमि को दर्शाती हुई दिखती है जिसमें विस्थापन,व्यक्तिगत स्वार्थ, हिंसा, विश्वासघात और मानवीय मूल्यों का हनन दिखाई देता है।

मोहन राकेश की कहानी' मलबे का मालिक ' सांप्रदायिकता की आड़ में अवसरवादिता की कहानी है, जिसमें रक्खा पहलवान नामक हिंदू व्यक्ति एक व्यक्ति चिरागदीन की हत्या केवल इसलिए कर देता है कि वह उसके मकान को हड़प सके। वह केवल चिरागदीन को ही नहीं मारता बल्कि उसकी पत्नी जुबैदा और दोनों बेटियों किशवर और सुल्ताना को भी मार देता है। रक्खा पहलवान एक घर पर कब्ज़ा करने के लिए अपनी मानवता, एवं संवेदना इंसानियत को भूल जाता है। वह अपने ही मुहल्ले के चिरागदीन का हत्यारा बन जाता है । चिरागदीन रक्खा पहलवान पर इतना भरोसा करता था कि देश विभाजन के समय वह अपने अब्बू के साथ पाकिस्तान ना जाकर भारत में ही रहता है। यह कहानी एक मुस्लिम के द्वारा हिंदू पर अत्यधिक विश्वास की कहानी है जिसमें सामाजिक संबंधों और विश्वास को तार-तार होते हुए देखा जा सकता है।

कहानी की शुरुआत साढ़े सात साल बाद लाहौर से अमृतसर आए लोगों के एक दल की बातचीत से होती है। ये लोग हॉकी का मैच देखने आए थे जो केवल एक बहाना था। वे तो उन शहरों, बाज़ारों, गली, मुहल्ले, घरों को देखने आए थे जो वह बहुत सालों पहले छोड़ कर चले गए थे। वह पुरानी यादों के साथ चलते हुए बाज़ार का एक-एक कोना याद करते हुए कहते हैं "देख…फतेहदीना,मिसरी बाज़ार में अब मिसरी की दुकानें पहले से कितनी कम रह गई हैं ! उस नुक्कड़ पर सुक्खी भठियारिन की भट्ठी थी, जहां अब पानवाला बैठा है।"[1] वह विभाजन के समय हुई सांप्रदायिकता से हुए बदलाव को देखने और पहचानने का प्रयत्न कर रहे थे। कई जगह मस्जिदों को हटाकर गुरुद्वारे बना दिए गए थे, परन्तु जब वह टोली एक मस्जिद को वैसे का वैसा ही खड़ा पाते हैं तो उन्हें आश्चर्य भी होता है। शहर के लोग उत्सुकतापूर्वक पाकिस्तानी टोली को देख रहे थे।

अमृतसर का बांसा बाज़ार एक उजड़ा हुआ बाज़ार था। जहाँ ज्यादातर बांसों और शहतीरों की दुकानें थीं जो सब की सब एक आग में जल गई थी। यह आग अमृतसर की सबसे भयानक आग थी जिसने कितने ही मुसलमानों और कुछ हिंदुओं के घरों को भी जला दिया था। जगह जगह मलबे के ढेर भीषण दंगो में लगाई आग के प्रमाण थे जो अब भी मौजूद थे। बांसा बाज़ार में उस दिन भी चहल-पहल नहीं थी क्योंकि उस बाज़ार में रहने वाले ज़्यादातर लोग तो अपने मकानों के साथ शहीद हो गए थे और जो चले गए थे उनमें से शायद किसी में भी लौटकर आने की हिम्मत नहीं थी। सिर्फ एक दुबला पतला बुड्ढा नही उस दिन वीरान बाज़ार में आया और वहां की नई इमारतों को देखकर जैसे भूल-भुलैया में पड़ गया। वह बाई तरफ जाने वाली एक गली की तरफ़ मुड़ना चाहता था, मगर हिचकिचाकर उसके पैर गली की तरफ़ मुड़ नहीं पाए। वह अपने घर को देखने की चाह में वहाँ आया था। गली में एक

बच्चे को रोता हुआ देखकर उसे चुप कराने के प्रयत्न से वह कहते हैं "इधर आ, बेटे! आ तुझे चिज्जी देंगे आ।"[2] अपना हाथ जेब में डालते है,तभी एक सोलह सत्रह साल की लड़की बच्चे को उठाकर गली के अंदर ले जाती है।

गनी मियां वही व्यक्ति है जो अपने परिवार को छोड़कर पाकिस्तान चला गया था और फिर कभी अपने परिवार से नहीं मिल पाया।एक नवयुवक मनोरी, गनी मियां को उसका घर दिखाने के लिए ले जाता है और दूर से एक मलबे की तरफ इशारा करते हुए कहता है 'वह था तुम्हारा मकान'। मलबे को देखकर गनी मियां की आंखें फटी की फटी रह जाती हैं। वह बहुत भावुक हो जाते हैं।गनी मियां के आते ही साढ़े सात साल बाद आते ही लोगों को इतने वर्ष पहले हुई घटना भी याद आ जाती है, वही घटना जिसने मानवता को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था।रक्खा पहलवान उस समय गली का बादशाह था और उसी ने चिराग को उसके घर से नीचे भुलाया था।चिराग उसका छुरेवाला हाथ पकड़कर चिल्लाया था "रक्खा पहलवान, मुझे मत मार ! हाय कोई मुझे बचाओ।"[3] रक्खे ने उसकी बांह पकड़ ली और जांघो को अपने घुटनों से दबाए हुए बोला "चीखता क्यों है, भैण के..... तुझे मैं पाकिस्तान भेज रहा हूं, ले पाकिस्तान।"[4] जो लोग इस दृश्य के साक्षी थे उन्होंने अपने किवाड़ बंद कर दिए थे और खुद को इस घटना के उत्तरदायित्व से मुक्त कर लिया था। बंद किवाड़ो में भी उन्हें देर तक जुबैदा, किशवर और सुल्ताना के चीखने की आवाजें सुनाई देती रही थी। रक्खे पहलवान और उसके साथियों ने उन्हें भी दे दिया था। रक्खे पहलवान को कुएं पर बैठा देखकर गनी मियां ने उसकी तरफ बाहें फैलाकर कहा "रक्खे पहलवान मुझे पहचाना नहीं। मैं गनी हूं,अब्दुलगनी, चिरागदीन का बाप।" गनी मियां कहते हैं, " मैंने उसे समझाया था कि मेरे साथ चला चल पर वह ज़िद पर अड़ा रहा कि नया मकान छोड़कर नहीं जाऊंगा। यह अपनी गली है यहां कोई खतरा नहीं है.....। रक्खे उसे तेरा बहुत भरोसा था। कहता था रक्खे के रहते मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मगर जब जान पर बन आई, तो रक्खे के रोके भी न रुकी।"[5] गनी के मुंह से भरोसे की बात सुनकर रक्खा पहलवान शर्मसार हो गया। गनी मियां का यह कहना कि, "मैंने आकर तुम लोगों को देख लिया, सो समझूंगा कि चिराग को देख लिया।"[6] इस वाक्य ने शायद कहीं न कहीं रक्खे पहलवान के मन को कचोटा होगा उसके भीतर की इंसानियत को जगाया होगा तभी वह गली के बाहर बाई तरफ की दुकान के तख्ते पर बैठकर उस दिन लच्छे को अपनी वैष्णो देवी की उस यात्रा का वर्णन सुनाता रहा जो पंद्रह साल पहले की थी।

रक्खे पहलवान ने चिरागदीन के उस घर को मलबा बना दिया जो उसके लिए स्वर्ग था।एक घर की लालसा में रक्खे ने भरे पूरे परिवार को खत्म कर दिया। चिरागदीन के परिवार की मृत्यु के पीछे कहीं भी सांप्रदायिक दंगो को कारण नहीं ठहराया जा सकता। इसके पीछे तो सिर्फ अवसरवादिता देखी जा सकती है जिसका फ़ायदा रक्खे पहलवान ने उठाना चाहा। इस कहानी में मलबा मिट्टी का मलबा न होकर रक्खे पहलवान के दिमाग़ का मलबा है। वह मलबा जिसमें उन्माद और वहशीपन भरा पड़ा है।

कहानी के मूल में कहीं भी हिंदू मुस्लिम घृणा को नहीं देखा गया। अगर देखा गया तो सिर्फ़ मकान पर कब्ज़ा करने की लालसा को। मलबे में चौखट की लकड़ी से गिरता हुआ भुरभुरा बिखरते हुए संबंधों का द्योतक है। विभाजन के साथ साथ यह कहानी सांप्रदायिकता, उसके दुष्परिणामों सामाजिक और दुष्परिणामों के संदर्भ में व्यापक हो उठती है, मोहन राकेश ने ' मलबे के मालिक' कहानी के माध्यम से हमारी क्षीण होती सामाजिकता, मनुष्यता और नागरिकता को उद्घाटित किया है।

**संदर्भ:**


**1.** मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां, राजपाल एंड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली -110006 पृष्ठ. 224

2. वही, पृष्ठ 225
3. वही, पृष्ठ 227
4. वही, पृष्ठ 227
5. वही, पृष्ठ 229
6. वही, पृष्ठ 230